सुषमा मल्होत्रा

न्यू जर्सी, अमेरिका

एक संदेश

गूँज उठी स्वतंत्र पवन में
उन वीरों की अमर पुकार,
जो गुलामी की बेड़ियों में भी
साहस का गान सुना गए।
उनके पावन बलिदानों से
हम स्वतंत्रता पा गए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।

अंधकार था युगों–युगों का,
स्वाधीनता से दूर हुआ।
उगा नवोदय का सूरज,
भारत का गौरव बढ़ा गए।
कोई नहीं है मित्र स्थायी,
इतिहास यही समझा गए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।

पूर्ण हुआ जब लक्ष्य हमारा,
हिमालय को ताज पहना दिया।
धरती ने फिर साँसें लीं,
स्वर्णिम भविष्य सजा गए।
स्वतंत्रता दिवस की गरिमा में
तिरंगा नभ में लहरा गए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।

जागो युवकों! स्मरण करो
राष्ट्र के उन अमर सपूतों को,
गाँधी, सुभाष और असंख्य वीर
जो भारत को स्वतंत्र करा गए।
जब झुकने लगी मानवता,
वे नवजीवन का दीप जला गए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।

नमन करो उन वीर जवानों को,
जो भगत सिंह के साथ चले।
हँसते–हँसते प्राण न्योछावर कर
देशभक्ति की ज्योति जला गए।
आधुनिक भारत के प्रहरी बनो,
मानवता का मान बढ़ा गए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।

जन–जन में हो प्रेम और सेवा,
मानवता का हो विस्तार।
कृष्ण–का ज्ञान मिले सबको,
जीवन में उजियारा छा जाए।
बाधाएँ हटें, पथ हों सरल,
भारत उन्नति–पथ पर बढ़ जाए।
अब संभाल लेना देश को,
जाने से पहले समझा गए।